Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

वर्तमान समय में संगीत से आजीविका के साधन

Dr. Ashwani Sharma*

Music Teacher, Dav School, Fatehabad

सार – ***युगों पहले से मानव अपनी आत्मा की भवना को कला के रूप में प्रस्तुत करता रहा है| कविता, चित्रकला अदि कला के विकास को हम पत्थर, पत्ते और कागज पर पाते है लेकिन संगीत को हम पीढ़ी दर पीढ़ी सीखते हुए संरक्षित कर रहे है, इस तरह से हम हमारे शास्त्रीय संगीत में अपनी मधुर गुणवत्ता को बरकरार रखा है।***

लिखित इतिहास के पहले समय से ही भारत में संगीत की समृद्ध परम्परा रही है। अभिलिखित संगीत का प्रारम्भ, भजनों और मंत्रों के उच्चारण से ईश्वर की पूजा और अर्चना की शैली में की जाती थी। भारत में सांस्कृतिक काल से लेकर आधुनिक युग तक आते-आते संगीत की शैली और पद्धति में जबरदस्त परिवर्तन हुआ है।

----------X----------

भूमिका

भारतीय संगीत के इतिहास के महान संगीतकारों जैसे कि कालिदास, तानसेन, अमीर खुसरो आदि ने भारतीय संगीत की उन्नति में बहुत योगदान किया है जिसकी गहराई और मधुरता को पंडित रवि शंकर, भीमसेन गुरूराज जोशी, पंडित जसराज, प्रभा अत्रे जैसे संगीत प्रेमियों ने भी कायम रखा।

कोई एक संगीत वाद्य बजाना आपको और आपके आसपास हर किसी को खुशी देता है | संगीत से हमारी स्मृति की क्षमता बढ़ जाती है। अपने समय प्रबंधन और संगठनात्मक कौशल को बेहतर बना सकते है, संगीत हमारे पढ़ने और एकाग्रता में सुधार लता है| इससे हम अपने आत्म अभिव्यक्ति को बेहतर बनता है और तनाव मुक्त करता है |

संगीत के छेत्र में जाने को इच्छुक छात्रों के लिए रोजगार के कई अवसर है | प्रतिभाशाली और योग्य व्यक्ति टेलीविजन, संगीत चैनल, टीवी चैनलों, आकाशवाणी और निजी एफएम चैनल स्टेशनों,संस्कृति और जनता के संबंधों के सरकारी विभागों,एक संगीतज्ञ के रूप में संगीत अनुसंधान संगठनों, संगीत कंपनियों, शैक्षिक संस्थानों, कला केंद्र के आदि में रोजगार के अवसर पा सकते हैं|इसके अलावा घर पर निजी कक्षाएं लगाने या एक संगीत स्कूल खोलने या उत्पादन और स्वतंत्र कार्यक्रमों के निर्देशन के रूप में स्व-रोजगार के लिए कई अवसर हैं।

म्यूजिक को इनसान की सबसे बेहतरीन खोजों में से एक माना जा सकता है। म्यूजिक के जरिए न केवल इमोशन, बल्कि अपनी फिलिंग्स को भी बखूबी जाहिर किया जा सकता है। पहले म्यूजिक को एक हॉबी और मनोरंजन का साधन मात्र माना जाता था, लेकिन वर्तमान व्यवसायिक युग में म्यूजिक करियर का बहुत बड़ा विकल्प बन गया है। इन दिनों तमाम टेलीविजन चैनल्स पर आने वाले म्यूजिकल टैलेन्ट हंट शो के प्रति युवाओं में जबर्दस्त क्रेज देखा जा रहा है। शायद यह भी एक वजह है कि युवा-वर्ग इसे फुल-टाइम करियर के रूप में अपनाने लगे हैं।

भारतीय मनोरंजन उद्योग जितनी तेजी से प्रगति कर रहा है, उसे देखते हुए संगीत के क्षेत्र में करियर की काफी अच्छी संभावनाएं बन रही हैं। सच तो यह है कि इन दिनों भारतीय संगीत उद्योग टॉप पर है, जिसकी गूंज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सुनी जा रही है। वोकल म्यूजिक, गजल या फिर पार्श्वगायकी के क्षेत्र में जाना चाहें अथवा विज्ञापन की दुनिया में धूम मचाना चाहें, संगीत उद्योग में कई तरह के विकल्प मौजूद हैं। संगीत के क्षेत्र में टीचिंग, सिंगिंग, म्यूजिशियन, रेकार्डिंग, कंसर्ट, परफॉर्मर, लाइव शो, डिस जॉकी, वीडियो जॉकी और रेडियो जॉकी के रूप में करियर की शुरुआत की जा सकती है। क्लासिकल, फॉक, गजल, पॉप, फ्यूजन आदि के क्षेत्र में भी भरपूर अवसर हैं। कॉपीराइटर, रिकॉर्डिंग टेक्नीशियन, इंस्ट्रूमेंट मैन्युफैक्चरिंग, म्यूजिक थेरेपी, प्रोडक्शन, प्रमोशन आदि क्षेत्र में भी बेहतरीन अवसर हैं। जहां

www.ignited.in

तक जॉब की बात है, तो एफएम चैनल्स, म्यूजिक कंपनी, प्रोडक्शन हाउस, म्यूजिक रिसर्च ऑर्गनाइजेशन, एजुकेशनल इंस्टीटयूट, गवर्नमेंट कल्चरल डिपार्टमेंट, म्यूजिक चैनल आदि में कोशिश की जा सकती है।

म्यूजिक एक ऐसा क्षेत्र है, जहां वेतन का कोई तय पैमाना नहीं है। यदि कोई अच्छा परफॉर्मर और म्यूजिशियन है, तो मिलिनेअर बनने में देर नहीं लगेगी। हालांकि इस क्षेत्र में आरजे, वीजे, रेडियो जॉकी के रूप में करियर की शुरुआत करके शुरुआती दौर में करीब 15 हजार रुपये प्रतिमाह सैलॅरी मिल सकती है। सिंगर, म्यूजिक कम्पोजर की आय उसकी योग्यता और प्रोजेक्ट पर भी निर्भर करती है। प्ले बैक सिंगर या अलबम के लिए आप कॉन्ट्रैक्ट बेसिस पर काम कर खूब कमाई कर सकते हैं।

वर्तमान समय में संगीत से आजीविका के साधन

८ वीं शताब्दी में घराने एक प्रकार से औपचारिक संगीत-शिक्षा के केन्द्र थे परन्तु ब्रिटिश शासनकाल का आविर्भाव होने पर घरानों की रूपरेखा कुछ शिथिल होने लगी क्योंकि पाश्चात्य संस्कृति के व्यवस्थापक कला की अपेक्षा वैज्ञानिक प्रगति को अधिक मान्यता देते थे और आध्यात्म की अपेक्षा इस संस्कृति में भौतिकवाद प्रबल था।

भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत कला को जो पवित्रता एवं आस्था का स्थान प्राप्त था तथा जिसे कुछ मुसलमान शासकों ने भी प्रश्रय दिया और संगीत को मनोरंजन का उपकरण मानते हुए भी इसके साधना पक्ष को विस्मृत न करते हुए संगीतज्ञों तथा शास्त्रकारों को राज्य अथवा रियासतों की ओर से सहायता दे कर संगीत के विकासात्मक पक्ष को विस्मृत नहीं किया। परन्तु ब्रिटिश राज्य के व्यस्थापकों ने संगीत कला के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण अपना कर उसे यद्यपि व्यक्तित्व के विकास का अंग माना परन्तु यह दृष्टिकोण आध्यात्मिकता के धरातल पर स्थित न था। उन्होंने अन्य विषयों के समान ही एक विषय के रूप में ही इसे स्वीकार किया, परन्तु वैज्ञानिक प्रगति की प्रभावशीलता के कारण यह विषय अन्य पाठ्य विषयों के बीच लगभग उपेक्षित ही रहा।

संगीत के पुनरुत्थान की दृष्टि से इस समय में घरानों की अन्तिम कड़ी के रूप में पं. भारतखण्डे एवं पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर यह दो ऐसे महान संगीतज्ञ हुए जिन्होंने संगीत के पुनरुद्धार के लिए परिश्रम किए और संगीत के आध्यात्मिक धरातल को सुदृढ़ रखते हुए ही उसको सर्वजन सुलभ बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

पं. भातखण्डे जी स्वयं एक शिक्षित व्यक्ति थे जिन्होंने प्रमुख रुप से 'विधि' (law) शिक्षा ग्रहण की थी परन्तु संगीत में विशेष रूचि रखने के कारण उन्होंने संगीत के ग्रन्थों का अध्ययन तथा विशद विश्लेषण करके संगीत को वर्तमान स्थिति के अनुकूल बनाने की दृष्टि से संगीत के कुछ मान्य सिद्धान्तों एवं क्रियात्मक प्रयोगों में परिवर्तन व परिवर्द्धन किए। 'संगीत शास्त्र' (१-४) 'संगीत पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन', 'उत्तररभारतीय संगीत का इतिहास', 'श्री मल्लक्ष्य संगीतम्', 'क्रमिक पुस्तक मालिका' (१-६) आदि ग्रन्थ लिखकर संगीत को विद्यार्थियों के लिए सुलभ बनाने का प्रयत्न किया। अनेकानेक संगीतज्ञों से मिलकर प्राचीन बन्दिशें एकत्रित करने तथा सरल स्वरलिपि पद्धति का निर्माण कर उन बन्दिशें के संरक्षण प्रदान किया। आप ही ने रागों को दस थाटों में वर्गीकृत करने का सफल प्रयास किया।

इसी प्रकार पं॰ विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ने भिन्न-भिन्न स्थानों का भ्रमण करके संगीत का प्रचार एवं प्रसार करते हुए समाज में पुन: संगीत के प्रति सम्मानीय भाव स्थापित किया जो सम्भवत: मध्यकाल एवं उत्तर मध्यकाल की राजनीतिक परिस्थितियों के कारण लुप्त हो चुका था और संगीत साधारण जनता के लिए केवल मात्र विलासिता का उपकरण ही रह गया था। पं॰ विष्णु दिगम्बर ने भी 'संगीत बाल प्रकाश', 'संगीत बाल बोध' आदि पुस्तकें लिखकर विद्यार्थियों के लिए संगीत सामग्री को उपलब्ध कराया तथा स्वतंत्र रूप से एक स्वरलिपि पद्धति का निर्माण करके उसके माध्यम से स्वर व लय के सूक्ष्म विभाजनों को सांकेतिक चिन्हों द्वारा इंगित करने तथा प्राप्त बन्दिशों को संरक्षण प्रदान करने का कार्य किया। इसके अतिरिक्त इन दोनों महान विभूतियों के प्रयत्नों से अनेक संगीत विद्यालय स्थापित किए गए।

संगीत शिक्षा को सामाजिक संरक्षण प्रदान करने की दृष्टि से यह विद्यालय समाज की धन-राशि पर ही आश्रित था। स्वयं संगीत कार्यक्रम आयोजित करके जो धन जनता से प्राप्त होता था उसे ही पुन: विद्यालय स्तर पर खर्च कर दिया जाता था क्योंकि पंडित जी का उद्देश्य धन अर्जित करना नहीं वरन् संगीत विद्या को अन्य विद्याओं के समान समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान दिलवाना था। फलस्वरूप उसके नियमन के लिए तथा संगीत शिक्षा को विधिवत बनाने के लिए पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकों, स्वरलिपि तथा परीक्षा के उपरान्त कुछ उपाधि वितरण का उपक्रम कर के संगीत शिक्षा को एक विशिष्ट आकार प्रदान करने का प्रयास किया।

१८ वीं शताब्दी में घराने एक प्रकार से औपचारिक संगीत शिक्षा के केन्द्र थे परन्तु ब्रिटिश शासनकाल का आविर्भाव

होने पर घरानों की रूपरेखा कुछ शिथिल होने लगी क्योंकि पाश्चात्य संस्कृति के व्यवस्थापक कला की अपेक्षा वैज्ञानिक प्रगति को अधिक मान्यता देते थे और आध्यात्म की अपेक्षा इस संस्कृति में भौतिकवाद प्रबल था।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत कला को जो पवित्रता एवं आस्था का स्थान प्राप्त था तथा जिसे कुछ मुसलमान शासकों ने भी प्रश्रय दिया और संगीत को मनोरंजन का उपकरण मानते हुए भी इसके साधना पक्ष को विस्मृत न करते हुए संगीतज्ञों तथा शास्त्रकारों को राज्य अथवा रियासतों की ओर से सहायता दे कर संगीत के विकासात्मक पक्ष को विस्मृत नहीं किया। परन्तु ब्रिटिश राज्य के व्यस्थापकों ने संगीत कला के प्रति भौतिकवादी दृष्टिकोण अपनाकर उसे यद्यपि व्यक्तित्व के विकास का अंग माना परन्तु यह दृष्टिकोण आध्यात्मिकता के धरातल पर स्थित न था। उन्होंने अन्य विषयों के समान ही एक विषय के रूप में ही इसे स्वीकार किया, परन्तु वैज्ञानिक प्रगति की प्रभावशीलता के कारण यह विषय अन्य पाठ्य विषयों के बीच लगभग उपेक्षित ही रहा।

सन्दर्भ

बृहद्देशी आदि कई प्राचीन संगीत ग्रन्थ (देवनागरी और रोमन में)

भारतीय संगीत में स्त्रियों का योगदान

भारतीय शास्त्रीय संगीत सबसे अधिक पुराना (मेरी खबर)

संस्कृति ने जोडे संगीत में नए आयाम (देशबंधु)

काशी में संगीत की परंपरा (काशी कथा)

रामविलास का संगीत-दर्शन

संगीत का इतिहास और भारतीय नवजागरण की समस्याएँ

Corresponding Author

Dr. Ashwani Sharma*

Music Teacher, Dav School, Fatehabad